तुलनात्मक राजनीति का महत्व एवम् उपयोगिता :–

राजनीतिक अध्ययनों में राजनीतिक व्यवहारों की वास्तविकता को स्पष्ट करने में तुलनात्मक अध्ययनों का बहुत योगदान है। प्राचीन समय से अब तक अनेक राजनीतिशास्त्रियों ने राजनीतिक व्यवहारों को समझने और समझाने के लिए राजनीतिक व्यवस्थाओं का अध्ययन, विश्लेषण और वर्गीकरण तुलनात्मक दृष्टिकोण से किया है। तुलनात्मक अध्ययनों में अपनायी जाने वाली विधियों के कारण ही राजनीति शास्त्र को आज राजनीति विज्ञान की श्रेणी में गिना जाने लगा है। इससे स्पष्ट है कि तुलनात्मक राजनीति का अध्ययन विशेष महत्व रखता है। संक्षेप में इसके महत्व को निम्न बिन्दूओं के अंतर्गत समझ सकते हैं:–

1. तुलनात्मक अध्ययनों द्वारा राष्ट्रीय सरकारों के व्यवहारों को समझने में सहायता मिलती है।

2. तुलनात्मक राजनीति राजनीतिक अध्ययनों को वैज्ञानिक स्वरूप प्रदान करती है।

3. तुलनात्मक अध्ययन नए सिद्धांत निर्माण में सहायक होते हैं।

4. तुलनात्मक अध्ययन प्रचलित राजनीतिक सिद्धांतों के पुनः परिक्षण में सहायक होते हैं, इससे उनकी प्रमाणिकता को जांचा जा सकता है।

5. इसके द्वारा विभिन्न देशों के राजनीतिक मूल्यों को समझा जा सकता है।

6. राजनीतिक क्रियाकलापों और प्रक्रियाओं को समझने में सहायक है।

7. विभिन्न राष्ट्रीय सरकारें राजकीय और गैर राजकीय संस्थाओं से किस तरह प्रभावित होती हैं और उनका आधार क्या है, इसको समझने मे सहायता मिलती है।

8. तुलनात्मक राजनीति राष्ट्रीय सरकारों के लिए नियम निर्माण और नीति निर्धारण में भी सहायक होती है।

9. राजनीतिक अध्ययनों को आर्दशवाद से व्यवहारवाद की ओर ले जाने में सहायक है।

तुलनात्मक राजनीति की विशेषताएं :–

तुलनात्मक राजनीति वर्तमान समय में राजनीतिक व्यवहारों की वास्तविकता को समझने में उपयोगी सिद्ध हो रही है। एक स्वतंत्र अनुशासन के रूप में इसके विकास ने राजनीतिक

अध्ययनों में इसके उपयोग को स्पष्ट स्वरूप प्रदान किया है। इसकी अध्ययन प्रकृति और विषय क्षेत्र के विस्तार को देखते हुए इसकी निम्नलिखित विशेषताएं स्पष्ट होती हैं –

1. तुलनात्मक राजनीति विभिन्न राजनीतिक संस्थाओं की प्रक्रियाओं, क्रियाकलापों, व्यवहारों आदी का तुलनात्मक अध्ययन है।

2. यह राष्ट्रीय सरकारों के बीच व्याप्त समानताओं असमानताओं का केवल तुलनात्मक अध्ययन ही नहीं करती है बल्कि उनका विश्लेषण कर सामान्यीकरण की कोशिश भी करती है।

3. इसका स्वरूप अंतःशास्त्रीय है, यह अपने अध्ययन क्षेत्र में अर्थव्यवस्था, समाजशास्त्र और मनोविज्ञाान जैसे विषयों को शामिल करती है।

4. यह राजकीय संस्थाओं के क्रियाकलापों के साथ साथ गैर राजकीय संस्थाओं के क्रियाकलापों का भी अध्ययन करती है।

5. इसकी अध्ययन पद्धति वैज्ञानिक है।

6. यह राजनीति विज्ञान के सारभूत तत्वों का भी अध्ययन करती है।

7. इसका अध्ययन सामान्य भी है और विशिष्ट भी।

8. यह राजनीतिक व्यवस्था की स्थिरता और उसके संरक्षण पर अत्यधिक जोर देती है।

9. यह राजनीतिक मूल्यों का भी अध्ययन करती है।

तुलनात्मक राजनीति की सीमाएं :–

अन्य अनुशासनों की तरह तुलनात्मक राजनीति के अध्ययन की भी अपनी सीमाएं हैं। इसमें सरकारों का अध्ययन, उनके व्यवहारों का विश्लेषण और उनका सामान्यीकरण करने की कोशिश की जाती है। लेकिन, कभी कभी यह इसलिए कठिन हो जाती है क्योंकि सभी सरकारों का चरित्र एक दूसरे से अलग होता है और एक ही पद्धति का उपयोग करते हुए सबके अध्ययन के आधार पर किसी निष्कर्ष तक पहुंचना, निष्कर्ष को वास्तविकता से दूर सकता है। अतः संक्षेप में तुलनात्मक राजनीति की समस्याओं को निम्नलिखित बिन्दूओं के तहत् समझा जा सकता है–

1. तुलनात्मक अध्ययनों के लिए चुने जाने वाले प्रत्ययों की सपष्ट परिभाषा और व्याख्या आवश्यक होती है। लेकिन प्रत्ययों की विकासात्मक प्रकृति इसमें समस्या उत्पन्न करती है। जैसे, राजनीतिक संचार, राजनीतिकरण और राजनीतिक समाजीकरण शब्द , लोकमत का

निर्धारण, विचाारधारा, क्रांति और संरचनात्मक अवधारणाएं राजनीतिक शब्दावलीयों में अपनी अर्थ भिन्नता के कारण समस्या उत्पन्न करते हैं।

2. तुलना के लिए राजनीतिक व्यवस्थाओं का सुनिश्चित आधार पर वर्गीकरण अनिवार्य है। लेकिन, सभी राजनीतिक व्यवस्थाओं का चरित्र एक दूसरे से अलग होने के कारण उनका वर्गीकरण सम्भव प्रतीत नहीं होता। जैसे– अमेरिका और भारत दोनों लोकतांत्रिक व्यवस्था वाले देश हैं। लेकिन शासन की प्रकृति, राजनीतिक संस्कृति, राजनीतिक समाजीकरण, लोकमत निर्माण आदी में व्याप्त भिन्नता के आधार पर इनका वर्गीकरण एक ही आधार पर नहीं किया जा सकता।

3. तुलनात्मक राजनीति में शासन वयवस्थाओं, राजनीतिक संस्थाओं, प्रक्रियाओं और राजनीतिक व्यवहार के बारे में अधिक से अधिक तथ्यों का संकलन आवश्यक है। ताकि तुलनाओं के माध्यम से सामान्य नियमों की स्थापना हो सके। इसलिए राजनीतिक व्यवहार से संबंधित तथ्यों, आंकड़ों और जानकारी का संकलन तुलनात्मक राजनीति की प्रमुख आवश्यकता है। लेकिन राजनीतिक आचरणों में भिन्नता के कारण यह सरल नहीं है।

4. राजनीतिक व्यवहार आवश्यक रूप से तार्किक आधारों अथवा वैज्ञानिक सिद्धांतों पर नहीं चलते हैं। इसलिए तुलनात्मक राजनीति में वैज्ञानिक अध्ययन कठिन हो जाता है।

5. अलग अलग देशों की राजनीति में लोग जिन भूमिकाओं का निर्माण निर्वाह करते हैं, उन्हें तुलनात्मक राजनीति के विद्यार्थी द्वारा विकसित एक जैसे नियमों के अधीन नहीं रखा जा सकता है। उदाहरण के लिए, भारत के लोंगों के चरित्र में व्यवहार के जो नियम उपलब्ध हैं उसे घाना या इण्डोनेशियां के लोंगों पर लागू नहीं किया जा सकता और न ही घाना या इण्डोनेशिया के लोगों के व्यवहार नियमों को भारत के लोंगों पर लागू किया जा सकता है।

6. अंतःशास्त्रीय उपागम को स्वीकार करने के कारण तुलनात्मक राजनीति का क्षेत्र इतना अधिक व्यापक हो गया है कि हमारे सामने जानकारी की यह कठिनाई आ जाती है कि तुलनात्मक राजनीति के विषय में किसको शामिल किया जाए और किसको नहीं।

तुलनात्मक राजनीति के अध्ययन में आने वाली उपरोक्त समस्याओं से यह प्रतीत होता है कि इसके द्वारा एक सामान्य सिद्धांत का निर्माण कितना कठिन कार्य है। लेकिन फिर भी राज्य वैज्ञानिकों द्वारा इसकें अध्ययन में ऐसे सिद्धांतों का अविष्कार किया गया है जिनके उपयोग करके न केवल राजनीतिक संरचनाओं बल्कि यथासंभव अधिक परिशुद्ध तरिके से उनकी अवसंरचनाओं की भी तुलना की जा सकती है।